जनसंचार में कैरियर के अवसर बढ़ेः डा. कृपाशंकर चौबे

एमए जनसंचार में प्रवेश के लिए 31 मई तक किए जा सकेंगे आवेदन

वर्धा, 02 मई 2016। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के वर्धा परिसर में इस शैक्षणिक सत्र से जनसंचार विभाग में कुल आठ पाठ्यक्रम संचालित किए जाएंगे। यह जानकारी देते हुए जनसंचार विभाग के अध्यक्ष डा. कृपाशंकर चौबे ने एक विशेष बातचीत में बताया कि बताया कि इनमें कुछ पाठ्यक्रम पहले से ही चलाए जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि एमए जनसंचार, एमफिल जनसंचार, पीएच.डी जनसंचार, इलेक्ट्रानिक मीडिया में पी.जी. डिप्लोमा, विज्ञापन एवं जनसंपर्क में पीजी डिप्लोमा, हिंदी पत्रकारिता में पीजी डिप्लोमा और मराठी पत्रकारिता में पीजी डिप्लोमा में प्रवेश की प्रक्रिया प्रारंभ हो गई है। एमफिल जनसंचार, पीएच.डी जनसंचार में प्रवेश के लिए आवेदन की अंतिम तारीख 15 मई है जबकि एमए जनसंचार, इलेक्ट्रानिक मीडिया में पी.जी. डिप्लोमा, विज्ञापन एवं जनसंपर्क में पीजी डिप्लोमा, हिंदी पत्रकारिता में पीजी डिप्लोमा और मराठी पत्रकारिता में पीजी डिप्लोमा में प्रवेश के लिए आवेदन करने की अंतिम तारीख 31 मई 2016 है।

डा. चौबे ने बताया कि उनकी योजना इसी शैक्षणिक सत्र से मल्टी मीडिया में स्नातक व स्नातकोत्तर का पांच वर्षीय समेकित पाठ्यक्रम प्रारंभ करने की भी है। उन्होंने कहा कि उनके विभाग के पास टीवी पत्रकारिता का प्रशिक्षण देने के लिए आवश्यक संसाधन हैं। पराड़कर मीडिया लैब में टीवी कार्यक्रम निर्माण के लिए कैमरे, वीडियो संपादन सुविधा, कम्प्यूटर लैब और न्यूज रूम है। विद्यार्थियों को यहां टीवी कार्यक्रम निर्माण के अलावा प्रायोगिक अखबार निकालने का प्रशिक्षण दिया जाता है। न्यूज रूम के संचालन की जिम्मेदारी वरिष्ठ पत्रकार अरुण कुमार त्रिपाठी को दी गई है जिन्होंने प्रोफेसर एडडंक्ट के रूप में जनसंचार विभाग को अभी-अभी ज्वाइन किया है। डा. चौबे ने बताया कि यहां पत्रकारिता का पाठ्यक्रम पूरा करने के बाद अनेक विद्यार्थी देश के विभिन्न मीडिया घरानों में पत्रकारिता कर रहे हैं जबकि अनेक लोग विभिन्न विद्या प्रतिष्ठानों में अध्यापन कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि पत्रकारिता में कैरियर के लिए अवसर बढ़े हैं।

डा. चौबे ने बताया कि जनसंचार विभाग के अध्यक्ष के रूप में उनकी सर्वोच्च प्राथमिकता विद्यार्थियों के भीतर जीवंत संवाद का कौशल विकसित करना है क्योंकि संवाद के बगैर पत्रकारिता चल ही नहीं सकती। किसी भी तरह की रचनात्मकता के लिए, विकास के लिए, यहां तक कि किसी समुदाय को आगे ले जाने के लिए संवाद जरूरी है। डा. चौबे ने कहा कि वे शिक्षा की पारंपरिक पद्धतियों के साथ संचार के उत्तर आधुनिक साधनों के

समन्वय के हिमायती हैं। उनका मानना है कि सिर्फ पारंपरिक शिक्षा पर टिके रहने से कई नई चीजें छूट जाएंगी और वह शिक्षा भी एकांगी होकर रह जाएगी इसलिए वे अपने विद्यार्थियों में द्रुत गति से विकसित हो रही टेक्नोलाजी और ज्ञान-प्राप्ति के नए साधनों के प्रति दिलचस्पी बनाए रखना चाहते हैं ताकि विद्यार्थी जनसंचार के क्षेत्र में हो रहे नए आविष्कारों के प्रति उदासीन न हों क्योंकि वैसा होने पर वे पिछड़ जाएंगे।

डा. चौबे ने कहा, "मैं एक अग्रगामी, गतिशील और उत्तरोत्तर आधुनिक शिक्षा पद्धति का पक्षधर हूँ। मैं अपने विद्यार्थियों को बंधनों से और आत्मभुग्धता से मुक्त रखने का हिमायती हूँ ताकि वे खुले मन से और खुले ढंग से चीजों को देख सकें और उसका उन्मुक्त होकर विश्लेषण कर सकें। उन्मुक्त परिवेश, संवाद व पारदर्शिता के सहारे ही मूल्य आधारित शिक्षा के अभ्युत्थान का उपयुक्त पंथ निर्मित हो सकता है और वह पंथ निर्मित होगा तभी विजातीय प्रभाव से दबते और प्रदूषित होते जा रहे विद्यापीठों को प्रदूषणमुक्त किया जा सकेगा। शिक्षण का मकसद सिर्फ शिक्षित बनाना नहीं, बल्कि सक्षम बनाना और दिशाहारा हो रहे समाज को सर्जनशील दिशा के संकेत देना भी होना चाहिए। यही अपेक्षा मीडिया से भी रहती है। शिक्षण की तरह मीडिया के लिए भी मूल्यों व आदर्शों की पक्षधरता काम्य है।

एक प्रश्न के उत्तर में डा. चौबे ने बताया कि वर्धा परिसर के अलावा एमए जनसंचार की नियमित पढ़ाई विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में भी हो रही है और उसमें प्रवेश के लिए आवेदन करने की अंतिम तारीख 31 मई 2016 है।